**दशरथ उवाच:**

प्रसन्नो यदि मे सौरे ! एकश्चास्तु वरः परः।

रोहिणीं भेदयित्वा तु न गन्तव्यं कदाचन्।

सरितः सागरा यावद्यावच्चन्द्रार्कमेदिनी।

याचितं तु महासौरे ! नऽन्यमिच्छाम्यहं।

एवमस्तुशनिप्रोक्तं वरलब्ध्वा तु शाश्वतम्।

प्राप्यैवं तु वरं राजा कृतकृत्योऽभवत्तदा

पुनरेवाऽब्रवीत्तुष्टो वरं वरम् सुव्रत।।

**दशरथकृत शनि स्तोत्र:**

नमः कृष्णाय नीलाय शितिकण्ठ निभाय च। नमः कालाग्निरूपाय कृतान्ताय च वै नमः।1।

नमो निर्मांस देहाय दीर्घश्मश्रुजटाय च। नमो विशालनेत्राय शुष्कोदर भयाकृते।2।

नमः पुष्कलगात्राय स्थूलरोम्णेऽथ वै नम:।  नमो दीर्घाय शुष्काय कालदंष्ट्र नमोऽस्तु ते॥3॥

नमस्ते कोटराक्षाय दुर्नरीक्ष्याय वै नमः। नमो घोराय रौद्राय भीषणाय कपालिने। 4। 

नमस्ते सर्वभक्षाय बलीमुख नमोऽस्तु ते। सूर्यपुत्र नमस्तेऽस्तु भास्करेऽभयदाय च।5। 

अधोदृष्टे: नमस्तेऽस्तु संवर्तक नमोऽस्तु ते। नमो मन्दगते तुभ्यं निस्त्रिंशाय नमोऽस्तुते।6। 

तपसा दग्ध-देहाय नित्यं योगरताय च। नमो नित्यं क्षुधार्ताय अतृप्ताय च वै नमः॥7॥

ज्ञान चक्षुर्नमस्तेऽस्तु कश्यपात्मज-सूनवे।  तुष्टो ददासि वै राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात् ।।।8।।।

देवा सुर मनुष्याश्च सिद्ध-विद्याधरोरगाः। त्वया विलोकिताः सर्वे नाशं यान्ति समूलतः॥9॥

प्रसाद कुरु मे सौरे ! वारदो भव भास्करे।  एवं स्तुतस्तदा सौरिर्ग्रहराजो महाबलः।10।

**।।दशरथकृत शनि स्त्रोत सम्पूर्णं।** **।**